20. वाक्य विचार और परिवर्तन

वाक्य विचार व्याकरण शास्त्र का तीसरा मुख्य अंग है। इसके अंतर्गत वाक्यों की रचना तथा वाक्यों के प्रकार पर विचार किया जाता है। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों के सार्थक क्रम से वाक्यों का निर्माण होता है।

शिक्षण-संकेत

- छात्रों को समझाएँ कि वह सार्थक शब्द समूह जो एक निश्चित एवं पूर्ण अर्थ प्रकट करता है, वाक्य कहलाता है। वाक्य कई शब्दों के योग से बनता है।
- वाक्य के अनिवार्य तत्वों के बारे में समझाएँ।
- बताएँ वाक्य बनाने के लिए सार्थकता, योग्यता, पूर्णता, निकटता, पदक्रम तथा अन्वय का होना आवश्यक है।
- वाक्य के दो अंग होते हैं– उद्देश्य और विधेय।
- उद्देश्य और विधेय का विस्तार भी बताएँ।
- छात्रों को वाक्य भेदों से परिचित कराएँ।
- समझाएँ, अर्थ के आधार पर और रचना के आधार पर वाक्यों के भेद किए जाते हैं।
- सभी भेदों को उदाहरण सहित समझाएँ।
- वाक्य बोलकर छात्रों को उनका वाक्य भेद बताने को कहें।
- छात्रों को वाक्य परिवर्तन करना सिखाएँ।
- सुनिश्चित करें सभी छात्र भली-भाँति विषय समझ गए हैं।
- वाक्य की अशुद्धि से परिचित करवाएँ।
- पृष्ठ 169-172 पर दी गई विभिन्न प्रकार की वाक्य अशुद्धियों को समझाएँ।